INTERN ATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES AND INFORMATION STUDIES
© VISHWASHANTI MULTIPURPOSE SOCIETY (Global Peace Multipurpose Society) R. No.659/13(N)
www.vmsindia.org

गोंदिया जिले की ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का स्वयं सहायता समुह द्वारा सक्षमीकरण– एक अध्ययन

डॉ. जी. वाय. ढोके (डॉ. जी. ए. भालेराव)
गृहअर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, एस. एस. गर्ल्स कॉलेज, गोंदिया
dr.gokuladhokey@gmail.com

सार {*Abstract*}

भारत एक ग्रामीण देश है जहां लगभग 50% आबादी महिलाओं की है । अतः राष्ट्र के विकास मे महिलाओं की भुमिका एवं योगदान उतना ही महत्वपुर्ण है जितना पुरूषों का, आवश्यकता है केवल देश की आधी आबादी अर्थात महिलाओं का प्रत्येक क्षेत्र मे सक्षमीकरण किया जाये तभी ये देश के विकास का आधार बनेंगी ।

स्वयं सहायता समुह एक सामाजिक , आर्थिक उपक्रम है । अध्ययनो द्वारा प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार महिलाओं को उनके अधिकारों का ज्ञान, निर्णय क्षमता का विकास, आर्थिक सामाजिक विकास एवं सक्षमीकरण मे स्वयं सहायता समुह की अहम भुमिका है । ग्रामीण क्षेत्र की अनेक महिलाओं का घर संसार स्वयं सहायता समुह द्वारा प्रारंभ किये व्यवसाय से उभरा है । स्वयं सहायता समुह के माध्यम से भारत की महिलाओ ने चाहे वह शहरी क्षेत्र की हो या ग्रामीण– एक नई पहचान बनायी है ।

अतः प्रस्तुत अध्ययन मे गोंदिया जिले की ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का स्वयं सहायता समुह द्वारा सक्षमीकरण हुआ अथवा नही इसका अध्ययन किया गया । अध्ययन हेतु यादृच्छीक नमुना पध्दती द्वारा कुल 80 ग्रामीण स्वयं सहायता समुह की महिलाओं का चुनाव किया गया । तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार एवं अवलोकन पध्दती का उपयोग कर **Frequency & Percentage** पध्दती द्वारा सांख्यकिय सार्थकता का परिक्षण किया गया । अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणाम अनुसार गोंदिया जिले की ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का स्वयं सहायता समुह द्वारा सक्षमीकरण हुआ है ।

Key Words स्वयं सहायता समुह, सक्षमीकरण, ग्रामीण महिला

प्रस्तावना {*Introduction*}

भारत कृषी प्रधान देश है । भारत की लगभग 70% जनता आज भी ग्रामीण क्षेत्र मे निवास करती है । जहां बेहतर शिक्षा की असुविधा होने के कारण आज भी भारत पुर्ण रूप से शिक्षित देश नही बन पाया है । महिलाये हमारे देश का आधार स्तंभ है यदि महिलाओं को उचित अवसर दिये जाये तो वे दुनिया बदलने की ताकत रखती है ।

21 वी सदी की महिला एक कुशल गृहणी से लेकर एक सफल व्यवसायी की भुमिका बखुबी निभा रही है । आज की महिला स्वयं को पुरूषों से बेहतर साबीत करने का एक भी मौका गवाना नही चाहती । वही ग्रामीण क्षेत्रो की महिलाओं के पास कृषी एवं गृह कार्यो के अतिरीक्त अन्य कोई व्यवसाय नही है और नही आय का कोई अन्य स्त्रोत है । ऐसी स्थिती मे स्वयं सहायता समुह महिला सक्षमीकरण मे महत्वपुर्ण भुमिका अदा कर रहा है । आर्थिक सक्षमीकरण यह प्रत्येक की आवश्यकता है । स्वयं सहायता समुह अर्थात निश्चितकाल मे बचत जमा करने के उद्देश्य से एकत्रीत आने वाला समुह है । जिसमे प्रत्येक सदस्य पर मासिक बचत के लिये सामुहिक दबाव द्वारा बचत को प्रोत्साहीत किया जाता है । साथ ही किसी भी सरकारी अथवा गैर सरकारी संगठन से जुड अपने व्यवसायी क्रियाओं को आगे ले जाने का निरंतर प्रयास किया जाता है ।

स्वयं सहायता समुह की संकल्पना बडे प्रमाण पर महाराष्ट्र के कोने कोने मे पहुची है इसके द्वारा आज भारतीय महिला आर्थिक स्वावलंबन की दिशा मे अग्रसर हो रही है । ग्रामीण तथा महिला उद्योजकता विकसीत करने मे स्वयं सहायता समुह का बडा योगदान है । स्वावलंबी, आत्मविश्वासपूर्ण तथा स्वयं के पैरो पर खडी स्त्री सही अर्थो मे देश के आर्थिक विकास मे योगदान देने की गवाही हमे स्वयं सहायता समुह के माध्यम से देते हुये दिखती है ।

महिला सक्षमीकरण आज एक बहुचर्चित मुद्दा है और महिलाये अपनी पुरी क्षमता का एहसास करने की दिशा मे अग्रसर है, वे तेजी से अपने जीवन एवं व्यवसाय की दिशा तय करने के मामले मे सशक्त हो रही है । अपनी निजी स्वतंत्रता एवं खुद फैसले लेने के लिये महिलाओं को अधिकार देना ही महिला सक्षमीकरण है । महिला सक्षमीकरण मे भी उसी क्षमता की बात होती है जहा पर महिलाये परिवार एवं समाज के सभी बंधनो से मुक्त होकर समाज मे महिलाओं के वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिये उन्हे सक्षम बनाना महिला सक्षमीकरण कहलाता है ।

अनुसंधान पध्दती {*Research method*}

समस्या सुत्रण

प्रस्तुत अध्ययन गोंदिया जिले के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का स्वयं सहायता समुह द्वारा सक्ष्मीकरण से संबधीत है । हमारे पारंपारीक ग्रामीण समाज की महिलाये जो अपनी इच्छाशक्ती, स्वतंत्रता और स्वाभीमान को दबाकर जीने के लिये मजबूर है क्या वे स्वयं, स्वयं की बाधाओं को मात कर सहकार्य से बचत गट के माध्यम से अपना विकास करने हेतु तैयार है? क्या उन्हे अपने अधिकारो की जानकारी है? क्या वे स्वयं से संबधीत, परिवार एवं समुह से संबधीत निर्णय लेने की क्षमता रखती है? अनेक ग्रामीण क्षेत्रो मे अनेक महिलाओं का संसार बचत गट द्वारा प्रारंभ किये व्यवसाय से खडा रहा है, तो क्या गोंदिया जिले के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के संदर्भ मे भी यही परिणाम देखने मिलता है? यह सभी जानने हेतु इस विषय क्षेत्र का चुनाव किया गया । विषेश रूप से विषय चुनाव का मुख्य उद्देश गोंदिया जिले की ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का स्वयं सहायता समुह द्वारा सक्ष्मीकरण हुआ अथवा नही इसका अध्ययन करना है ।

उद्देश {*Objective*}

1) गोंदिया जिले की ग्रामीण क्षेत्र की महीलाओं मे स्वयं सहायता समुह मे सहभागी होने के पश्चात निर्णय क्षमता का अध्ययन करना

2)गोंदिया जिले की ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का स्वयं सहायता समुह द्वारा सक्षमीकरण हुआ अथवा नही इसका अध्ययन करना

उपकल्पना {*Hypotheses*}

1) स्वयं सहायता समुह द्वारा ग्रामीण महिलाओं की निर्णय क्षमता मे वृध्दि हुयी है ।

2) स्वयं सहायता समुह द्वारा ग्रामीण महिलाओं का सक्ष्मीकरण हुआ है ।

मर्यादा {*Limitation*}

1) प्रस्तुत अध्ययन गोंदिया जिले के ग्रामीण क्षेत्र तक सीमित है ।

2) प्रस्तुत अध्ययन केवल महिलाओं तक सीमित है ।

संशोधन पध्दती {*Research methodology*}

प्रस्तुत अध्ययन गोंदिया जिले के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का स्वयं सहायता समुह द्वारा सक्ष्मीकरण से संबधीत है । जिसमे संशोधन हेतु गोंदिया जिले के ग्रामीण क्षेत्र कंटगी, तिगांव, कवलेवाडा तथा महारीटोला की स्वयं सहायता समुह से संबधीत कुल 80 महिलाओं का चुनाव यादृच्छिक नमुना पध्दती द्वारा किया गया ।

तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार एवं अवलोकन पध्दती का उपयोग कर प्राथमिक सुचनाये प्राप्त की गयी । संकलीत तथ्यों की सांख्यिकीय सार्थकता परिक्षण हेतु Frequency तथा Percentage पध्दती का उपयोग किया गया।

संकलीत तथ्यों का प्रस्तुतीकरण एवं स्पष्टीकरण {*Research findings & discussion*}

अध्ययन हेतु चुनी गयी ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं द्वारा प्राप्त जानकारी अनुसार स्वयं सहायता समुह द्वारा उनकी निर्णय क्षमता मे वृद्धि हुयी । प्राप्त आंकडो अनुसार 57.5% महिलाये समुह के लिये अथवा सामुहिक निर्णय लेने लगी है जबकी 67.5% महिलाये पारिवारीक निर्णय लेती है । वही 93.75 % ग्रामीण महिलाये स्वयं सहायता समुह मे सहभागी होने के पश्चात भविष्य हेतु तैयार की जाने वाली योजना संबधी भी निर्णय लेने लगी है ।

आगे दी गयी सारणी क्रमांक 1 मे प्रस्तुत किये आंकडो द्वारा यह स्पष्ट होता है कि गोंदिया जिले की ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं मे स्वयं सहायता समुह मे सहभागी होने के पश्चात निर्णय लेने की क्षमता विकसीत हुयी है ।

सारणी क्र. 1 – स्वयं सहायता समुह मे सहभागी होने के पश्चात ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं मे निर्णय क्षमता विकास दर्शाती सारणी

अ. क्र.	निर्णय क्षमता	संख्या (प्रतीशत)		
		हां	कुछ प्रमाण मे	नही
1	समुह/सामुहीक निर्णय लेने मे वृद्धि	46 (57.5%)	24 (30%)	10 (12.5%)
2	पारिवारीक निर्णय लेने मे वृद्धि	54 (67.5%)	16 (20%)	10 (12.5%)
3	भविष्य की योजना संबधी निर्णय लेने मे वृद्धि	75 (93.75%)	5 (6.25%)	––

सारणी क्र. 2 स्वयं सहायता समुह मे सहभागी होने के पश्चात महिलाओं के सक्ष्मीकरण का स्तर दर्शाती है । जिसके अंतर्गत प्राप्त आंकडो के अनुसार स्वयं सहायता समुह मे सहभागी होने के पश्चात 93.73% महिलाओं के आत्मविश्वास मे वृद्धि हुयी है । 92.5% महिलाओं की संवाद शैली मे वृद्धि हुयी है, 66.25% महिलाओं की सामाजिक जागृकता मे वृद्धि हुयी है । 55% महिलाओं मे तनाव एवं संघर्ष की स्थिती मे सहयोग करने मे वृद्धि

हुयी है । 68.75% महिलाये सामुदायीक जनजागृती करने मे सहभागी होती है । 58.75% महिलाओं को समुदाय मे पहचान मिली है, 60% महिलाये स्वयं सहायता समुह मे सहभागी होने के पश्चात अधिकाधीक कार्यक्रमों मे सहभागी होती है, 58.75% महिलाये अधिकाधीक कार्यालयों मे भेट देती है जबकी 78.75% महिलाओं का विविध कार्यो के संदर्भ मे बॅको मे भेट देना बढा है । आर्थिक स्तर के संदर्भ मे 93.75% महिलाओं के आर्थिक स्तर मे वृद्धि हुयी है, 62.5% महिलाओं को रोजगार प्राप्ती वही 61.25% महिलाओं मे नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ है। प्राप्त आंकडो अनुसार 78.75% महिलाओं का सक्षमीकरण हुआ है।

सारणी क्र. 2 – स्वयं सहायता समुह मे सहभागी होने के पश्चात ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के सक्ष्मीकरण का स्तर दर्शाती सारणी

अ. क्र.	सक्ष्मीकरण	संख्या (प्रतीशत)		
		हां	कुछ प्रमाण मे	नही
1	आत्मविश्वास मे वृद्धि	75 (93.75%)	5 (6.25%)	––
2	संवाद शैली मे वृद्धि	74 (92.5%)	––	6 (7.5%)
3	सामाजिक जागृकता मे वृद्धि	53 (66.25%)	20 (25%)	7 (8.75%)
4	तनाव संघर्ष के दरम्यान सहयोग करने मे वृद्धि	44 (55%)	18 (22.5%)	18(22.5%)
5	समुदायीक जनजागृती करने मे सहभाग	55 (68.75%)	18 (22.5%)	7 (8.75%)
6	समुदाय मे अपनी पहचान मे वृद्धि	47 (58.75%)	26 (32.5%)	7 (8.75%)
7	अधिकाधिक कार्यक्रमों मे सहभागी होने मे वृद्धि	48 (60%)	21 (26.25%)	11 (13.75%)
8	अधिकाधिक कार्यालयों मे भेंट देने मे वृद्धि	47 (58.75%)	18 (22.5%)	15 (18.75%)
9	बॅको मे भेट देने मे वृद्धि	63 (78.75%)	10 (12.5%)	7 (8.75%)
10	आर्थिक स्तर मे वृद्धि	75 (93.75%)	5 (6.25%)	––
11	रोजगार प्राप्ती हुयी है	50 (62.5%)	––	30 (37.5%)
12	नेतृत्व क्षमता मे वृद्धि	49 (61.25%)	8 (10%)	23 (28.75%)
13	आपका सक्ष्मीकरण हुआ है	63 (78.75%)	17 (21.25%)	00 (00%)

निष्कर्ष {*Conclusion*}

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा प्राप्त आंकडो अनुसार गोंदिया जिले की ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं मे स्वयं सहायता समुह द्वारा निर्णय लेने की क्षमता विकसीत हुयी है तथा महिलाओं का सक्ष्मीकरण हुआ है ।

संदर्भ

1} IJMRA-RSS13 may 12, volume 2, issue 2, ISSN, 2249-2496 “Ground realties of self help group bank linkage programme an, empirical analysis,”sanjay kantidas.

2} “A critical study of self help group and their micro finance activity in Thane city.” By Madhubal Swami, june 2012.

3} BIMS International Journal of social science research. “A study on women empowerment through self help groups with special reference to Ramnagar. District Karnatka.” Pro. Nandini R, Prof. Sudha. ISSN 2455- 4839

4} IOSR Journal of business and management. ISSN 2278-487

5} Volume 8, ISSUE6 (March-April 2013_, PP17-25, www.iosrjournals.org “A sutdy on women empowerment through self help groups with special reference to mettupalayam taluka in Coimbatore District. S. Thangamani, Smucthusel.

6} International journal of law, education, social & sports studies (IJLESS_ “A research study on rural empowerment through women empowerment self help groups, a new experiment in India”. Dr. Arjun Y. Pangannavar.

7} http..//anvpublication.org/journals/HTMLpaper-aspx

8} http../hi-vikaspedia.in/socialwelfare

9} http..//welcomenri.com

10} http../www.gyanipandit.com

11} http..//www.deepawali.co.in

12} https//www.artofliving.org

13} http//www.hinvishortstories.com

❖❖❖❖